आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

पेंगोलिन

चित्र व लेखः प्रोइति रॉय

अपने नाम की तरह इसके काम भी मज़ेदार हैं। रात में चींटे, दीमक, कीड़े खाने निकलता है। और दिन भर खूब सोता है। सोते हुए वो गेंद जैसा गोल बन जाता है। इसके शरीर पर सख्त शल्क होते हैं। इससे इसका बचाव होता है। दुनिया भर में पेंगोलिन मिलते हैं। हमारे देश में भी। पर अब दुनिया भर में ये कम होते जा रहे हैं।

ISSN 2456-4753

अंक 4 वर्ष 6

अक्टूबर - नवम्बर 2021

मूल्य ₹ 60

तीतर के आगे दो तीतर
तीतर के पीछे दो तीतर

तीतर का एक बच्चा गाए
एक झाड़ी के भीतर

सुशील शुक्ल
चित्रः प्रोइति रॉय
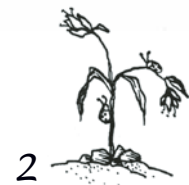
अजगर दोस्त

सतविशा, चौथी, लोहाघाट, उत्तराखण्ड
चित्रः भार्गव कुलकर्णी

एक दिन मैं आँगन में घूम रही थी। तभी सामनेवाले कनेर के पेड़ की कोटर में से एक एनाकॉण्डा अजगर निकला। वह मुझसे बहुत बड़ा और सुनहरे रंग का था। मैं उसे देख चिल्लाने ही वाली थी लेकिन उसने अपनी पूँछ से मेरा मुँह बन्द कर दिया। पता नहीं चल रहा था कि उसकी पूँछ शुरू कहाँ से हुई थी। वह मुझे कोटर के अन्दर ले गया। वहाँ दो और अजगर थे। वे दोनों स्लेटी रंग के थे। तीनों अजगर हिन्दी बोल रहे थे। मैं उनसे बातें करने लगी। हम दोस्त बन गए।

सुनहरे रंग के अजगर का नाम तरुण था। उनके पास कैमरे थे। मैंने उनके साथ सेल्फी भी ली। उनके कैमरे पत्तों के बने हुए थे। उन्हें सेल्फी लेनी भी आती थी। मैंने अजगर वाली बात मम्मी-पापा के अलावा और किसी को नहीं बताई। मैंने उन्हें वह सेल्फी भी दिखाई। यह हमारा सीक्रेट था। जब भी कोई बिल्ली बाहर दिखती है तो मैं तीनों अजगरों को कोटर में छुपा देती हूँ। मैंने पढ़ा है कि बिल्ली साँप को मार देती है।

चाँद पर जाने वाले पूर्णिमा को ही वहाँ पहुँचते होंगे। ईद के चाँद पर तो खड़े होने तक की जगह नहीं होती!

दोस्ती

धरमवीर
चित्रः हबीब अली

नीम के पेड़ के पास मीता का घर था। इसी पेड़ पर एक चींटा रहता था। वह एकदम अकेला था। उसका कोई दोस्त नहीं था। मीता रोज़ चींटे को देखा करती थी। एक दिन उसने चींटे से पूछा, "क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?"

चींटे ने कहा, "हाँ, हाँ, ज़रूर।"

मीता ने कहा, "तो जल्दी मेरे घर आ जाओ।"

चींटा बोला, "तुम्हारा घर दूर है। मैं वहाँ कैसे आऊँगा?"

मीता दौड़कर अपने कमरे में आई। डिब्बे से ऊन का गोला निकाला। ऊन के एक सिरे पर पत्थर बाँधा। और उसे पेड़ की टहनी की तरफ उछाल दिया। इससे पेड़ से मीता के घर तक एक पुल बन गया। चींटा इसी पुल से चलता हुआ मीता के घर पहुँच गया। अब वे दोनों मिलकर खेलते हैं।

कविता आगे बढ़ाओ

सुशील शुक्ल
चित्रः वसुन्धरा अरोड़ा

फिर क्या हुआ
फिर वही हुआ
जिसका डर था
साँप उस दिन घर था

पूँछ उसकी बाहर थी
बिल के भीतर सर था

फिर क्या हुआ
फिर वही हुआ
जिसका डर था
पानी में मगर था

बीच में हाथी था
मैं उसके इधर था
वो उसके उधर था

1+ 2 = 3
और 2 x 3 का आधा 3 है

1+ 2+ 3 = 6
और 3 x 4 का आधा 6 है

1+ 2+ 3+ 4 =10
और 4 x 5 का आधा 10 है

1+ 2 + 3 + 4 + 5 = 15
और 5 x 6 का आधा 15 है

1+ 2 + 3 + 4 + 5 + 6 = 21
और 6 x 7 का आधा 21 है

7 और 8 संख्याओं से भी इस तरह का पैटर्न बनता है?
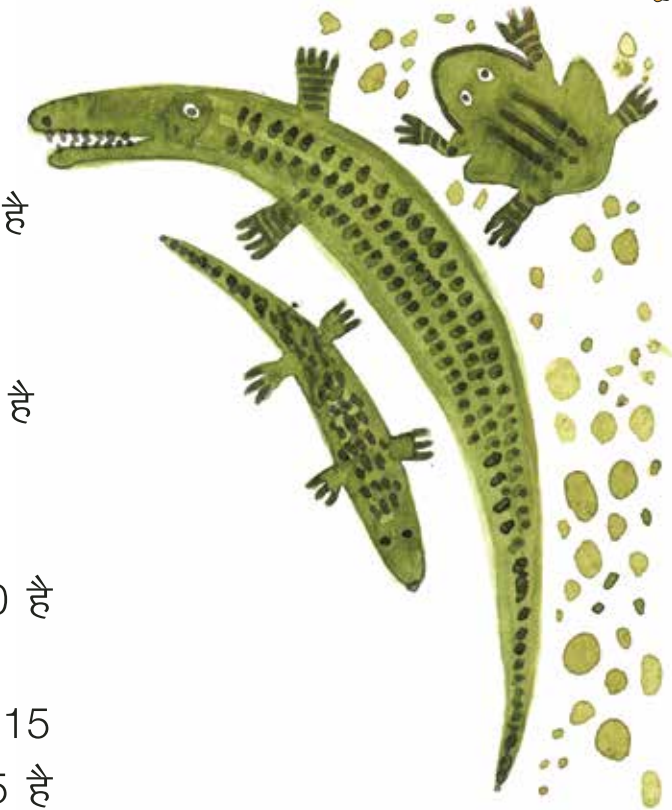
घोड़ा + 5 = दो घोड़े
घोड़ा - गिलहरी = सुअर
गिलहरी = 2
सुअर= ?

चिड़िया का बच्चा

विवेक कडलुआ
चित्रः पूर्ति बापट

चिड़िया का एक बच्चा है
अभी उड़ने में कच्चा है
चींचीं चींचीं करता है
अक्केले में डरता है
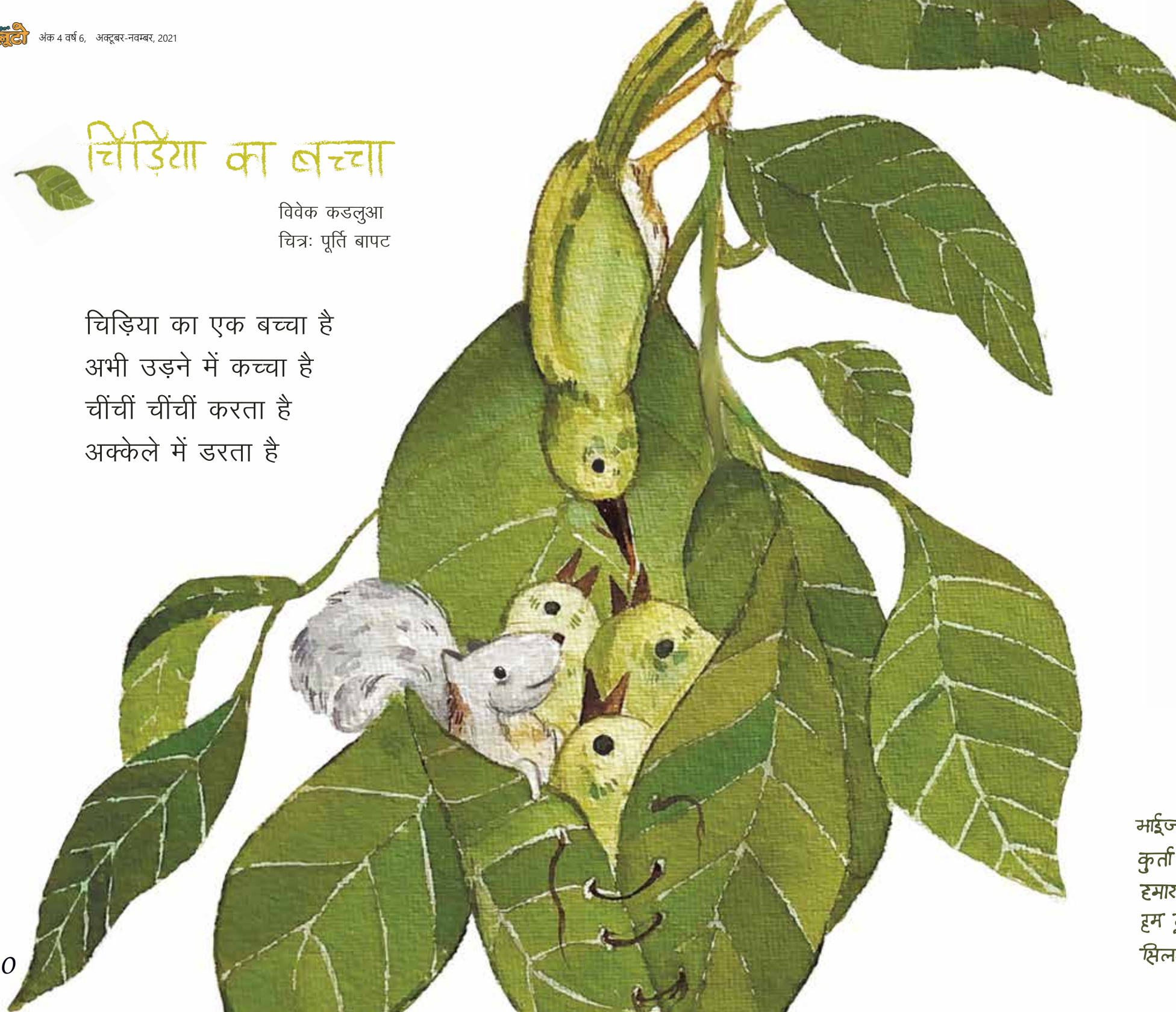
हाथी की सूँड

अनुपमा गुप्ता
चित्रः पूर्ति बापट

हाथी की यह सूँड बड़ी
सोच रही है खड़ी-खड़ी
बाकी हाथी सो जाए तो
सुस्ता ले वह पड़ी-पड़ी

पेड़

निधि गौड़
चित्र: भार्गव कुलकर्णी

घड़ी के काँटे काँटे हैं तो घड़ी का फूल क्या है?

अंक 4 वर्ष 6, अक्टूबर-नवम्बर, 2021 प्लूटो

मुझे पेड़ बनना है। बहुत बड़ा पेड़। फिर मैं दिनभर बाहर रहूँगा। नो होमवर्क। मेरे कँधे पर चिड़िया बैठेगी। अपना घोंसला बनाएगी। मैं उसके घोंसले में झाँकूँगा। कोई उसके अण्डे खाने आएगा तो मैं पत्तियाँ हिला-हिलाकर उसे डरा दूँगा। “फिर तो घोंसला गिर जाएगा न!” उसके दोस्त ने कहा।

“तो मैं कोई और आइडिया लगा लूँगा।”

“पर तू कहीं और नहीं जा सकेगा। एक ही जगह खड़े रहना पड़ेगा।” “लेकिन मुझे आसमान कितना पास दिखेगा। और तू कितना छोटा दिखेगा। मेरे आसपास तू बैडमिण्टन खेलेगा तो मैं तेरी शटल कॉक फँसा लूँगा।”

“मैं तुझ पर चढ़ जाऊँगा।”

“कितना मज़ा आएगा! फिर हम गली से आने-जाने वालों को देखेंगे।”

“तू तेज़-तेज़ पत्तियाँ हिलाना। मैं भूत की आवाज़ निकालूँगा।”

“तू चिड़िया बन जाना।
फिर हम साथ-साथ रहेंगे।”

भैंस

मयंक टण्डन
चित्रः शिवम चौधरी

जानवरों में सबसे मस्त तालाब में खड़ी भैंस होती है। आराम से खड़े-खड़े वो एक दिशा में देखती रहती है।

चारों पैरों में हील पहनकर भैंस ठुमक-ठुमक कर चलती है। उसे घुँघरू पहना दें तो मस्त छन-छन-छन-छन बजें।

लोगों को लगता है कि भैंस घास खाती है। लेकिन मैंने देखा है कि वो अपने मुँह में घास का दही जमाती है। फिर उसे मुँह में मथ-मथ कर लस्सी पीती है।

कौवा भैंस का बेस्ट फ्रैंड लगता है। भैंस की पीठ पर बैठ वो नदी भी पार कर जाता है।

गााय भैंस की रिश्तेदार लगती है। खाना वो एक जगह खड़ी होकर खाती हैं, पर पॉटी चलते-चलते करती हैं।

भैंस की बजाय गाय को ज़मीन का ख्याल ज़्यादा है। वो चलते-चलते ज़मीन पर पंखा करती रहती है।

खुरदुरे पत्थर और दीवाल के कोने इसलिए होते हैं कि भैंस कहीं भी खुजली कर सके। प्लूटो

बन्दर और कछुआ

मिज़ो लोककथा

चित्रः नीलेश गहलोत

बन्दर और कछुआ दोस्त थे। एक दिन कछुए ने बन्दर से कहा, “चलो मछली पकड़ने चलते हैं।” बन्दर बोला, “मुझे तैरना नहीं आता।”

कछुआ बोला, “तुम मेरी पीठ पर बैठे रहना।”

बन्दर कछुए की पीठ पर बैठ गया। कछुए ने मछली पकड़ने पानी में डुबकी लगा दी। बन्दर चिल्लाया, “मेरा दम घुट रहा है। ऊपर चलो।”

कछुआ बोला, “तुम पहली बार पानी में आए हो। इसीलिए डर रहे हो। कुछ नहीं होगा।” कछुआ थोड़ी देर और पानी में मछलियाँ पकड़ता रहा।

बन्दर का दम घुट चुका था। वह अब भी कछुए की पीठ से चिपका था। कछुआ उसे लेकर पानी से बाहर आया। उसने मछलियों के दो बराबर हिस्से किए। एक हिस्सा बन्दर को देते हुए बोला, “ये रहीं तुम्हारे हिस्से की मछलियाँ।” बन्दर से क्या जवाब मिलता। वह तो मर चुका था। कछुआ समझा बन्दर उससे नाराज़ है। वह बोला, “नाराज़ होकर तुम तो अपने खोल में ही चले गए। चलो, ये सारी ही मछलियाँ तुम ले लो।” उसने सारी मछलियाँ बन्दर के सामने रख दीं और वहाँ से चला गया।
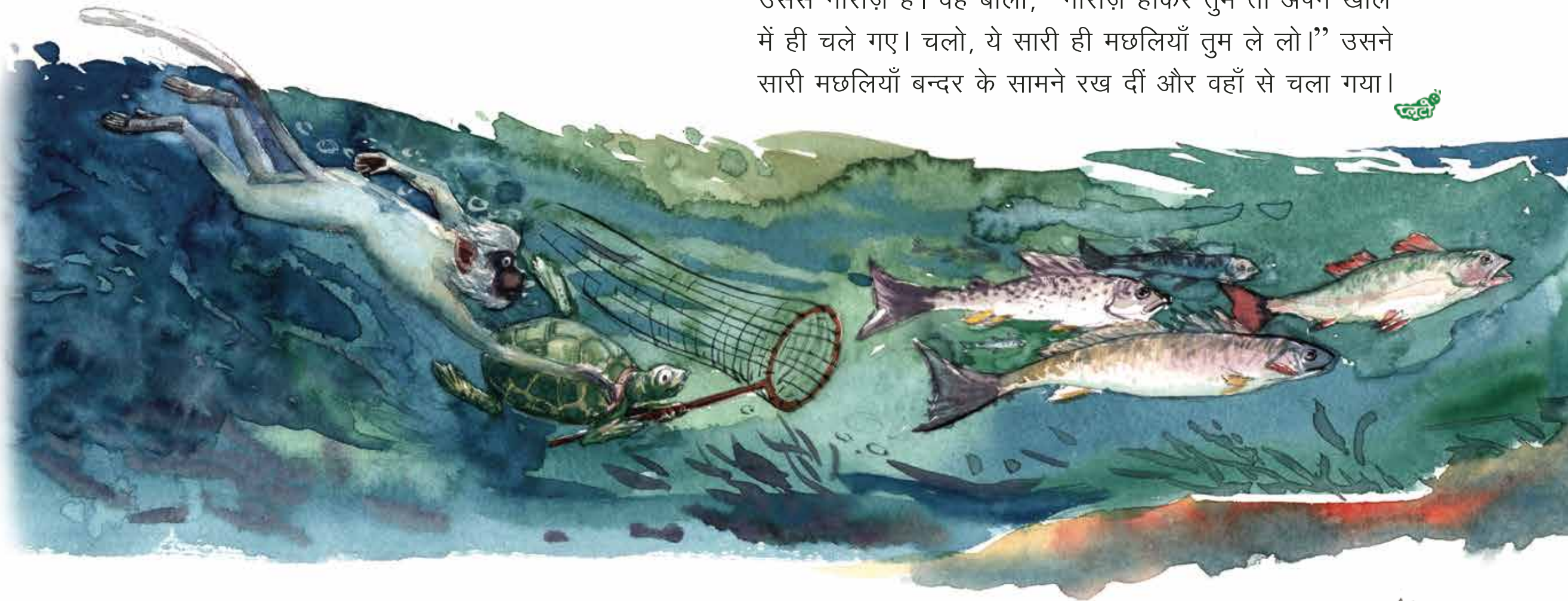
छतरियाँ

कहानी और चित्रः मिराया अहलावत, पहली, देहरादून
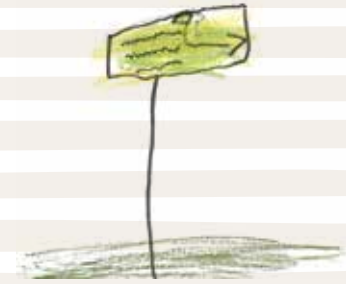
एक बार एक आदमी था। उसका नाम था टुमटुम। एक सुबह वो सैर करने बगीचे में गया। वहाँ उसे एक पोस्टर दिखा। उस पर लिखा था - *छतरियों की दुनिया दाईं तरफ है।*

उसने सोचा चलो छतरियों की दुनिया देखते हैं। उसको वहाँ कई सारी रंगबिरंगी छतरियाँ दिखीं। किसी में बहुत सारे रंग थे, किसी में कम। किसी पर तितली बनी थी और किसी पर फूल। टुमटुम बहुत खुश हुआ।

तभी उसे एक छोटी-सी छतरी दिखी - सबसे अलग! उसने सोचा, "अरे, यह छतरी किसकी होगी?"

तभी एक आवाज़ आई, "टुमटुम, ये मेरी छतरी है। मैं टिड्डा हूँ। यह कुकुरमुत्ता मुझे बारिश से बचाता है!"
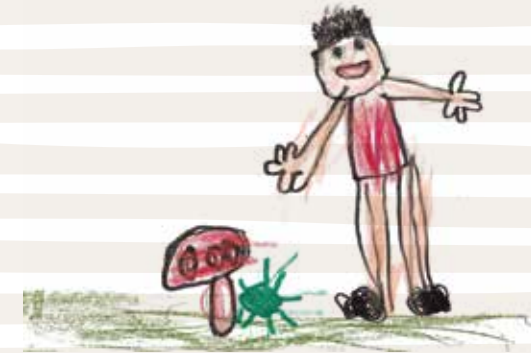
तभी ज़ोर की बारिश हुई। टुमटुम और टिड्डा दोनों अपनी-अपनी छतरियों के नीचे बैठ गए। और बारिश से बच गए।

मुन्ना धीमान
चित्रः उमा मजूमदार

मछली बोली - कितना सुन्दर गाँव तुम्हारा वाह!
इतना सुन्दर गाँव छोड़ तुम, यहाँ कर रहे क्या?
हम तो पाँव हैं बगुले के, जो आया मछली खाने
बगुलाजी की चोंच अभी, आएगी तुम्हें उठाने।

मछली बोली - इसकी इजाज़त लो पानी से तुम
पानी कहे रस्सी से पूछो रस्सी में हैं हम।

पता चला कि रस्सी को तो, काट गया एक चूहा
सपना टूटा खत्म कहानी हू हा हू हा हू हा!!!

'कविताओं के अण्डे' में हमने कविताओं की कुछ लाइनें दी थीं। जिन्हें आगे बढ़ाना था। यह कविता उस पर आधारित है।

सयानी बिटिया

मधुकर उपाध्याय
चित्रः बरखा लोहिया

मेरी रानी बिटिया
बड़ी सयानी बिटिया
बैठी है किनारे
बिस्तर पर हमारे
गिर जाएगी धम से
फिर बोलेगी हम से
पापा! जल्दी आना
मुझको प्लीज़ उठाना

अंक 4 वर्ष 6, अक्टूबर-नवम्बर, 2021 प्लूटो

टेढ़ी दुम

अस्पताल में पहुँचा कुत्ता
बैठ गया गुमसुम
डॉक्टर बोले कहो हाल क्या
क्यों आए हो तुम

कुत्ता बोला यही सोचकर
होश हुए हैं गुम
कभी नहीं क्या सीधी होगी
मेरी टेढ़ी दुम

चित्रः बरखा लोहिया

RO ROO
रू रू

Paro Anand
पारो आनन्द

illustration : Rishi Sahany
चित्र : ऋषि सहानी

रू रू कँगारू बच्चा है। वह अपनी माँ की थैली में रहता है। अकेला और उदास। एक दिन वो बाहर की बड़ी खुली दुनिया देखता है। उसे रोज़-रोज़ नए दोस्त मिलते हैं। वह माँ से उन्हें थैली में आने को मनाता रहता है।

फिर एक दिन कुछ बहुत दिलचस्प होता है और रू रू दोस्तों के साथ पूरी तरह थैली-बाहर हो जाता है।

सम्भाल कर किताब खोलना, ऋषि सहानी के बनाए कँगारू, शुतुरमुर्ग, साँप, कीड़े, हाथी...कूद कर आ सकते हैं।
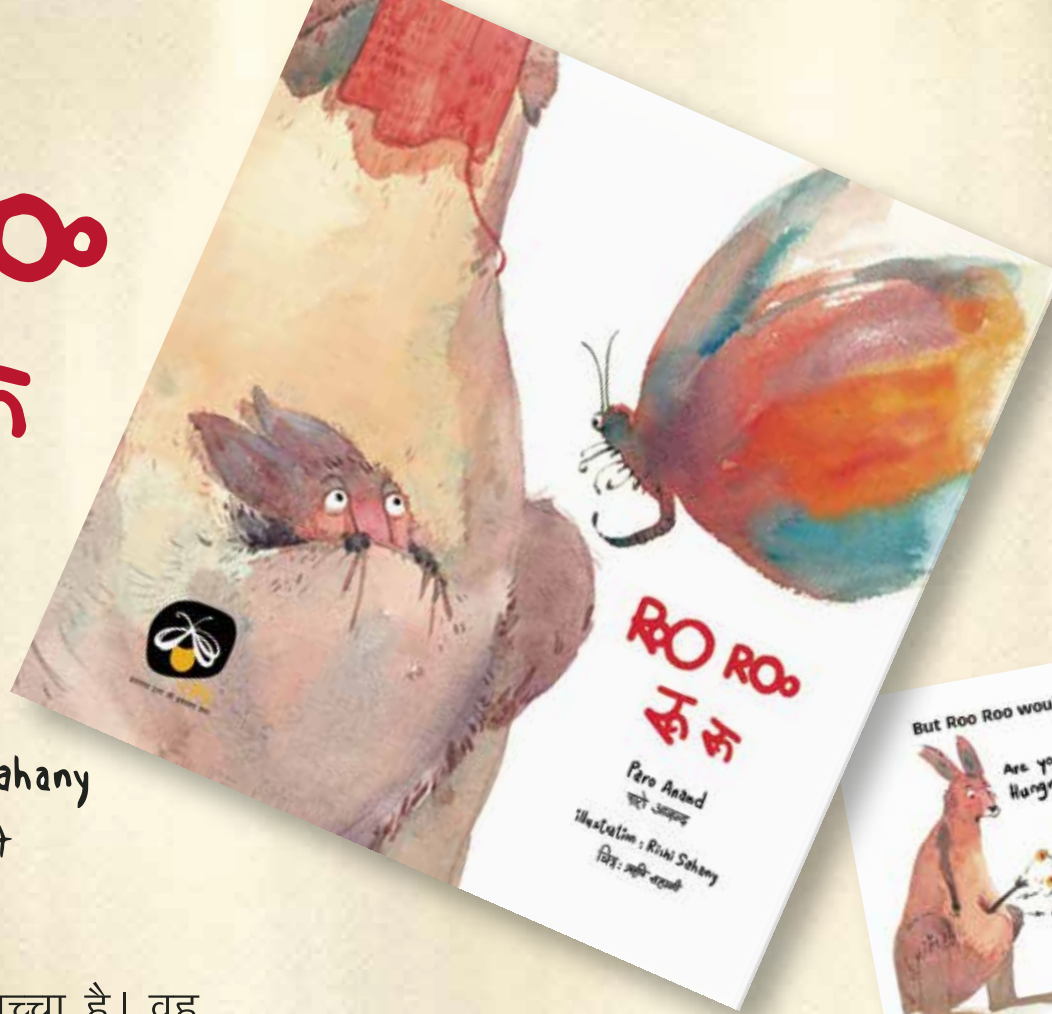
पारो आनन्द की यह चित्रकथा हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों में है।
इसे प्लूटो के पते पर लिखकर या www.ektaraindia.in/ektarashop से मँगा सकते हो।

शुक्रवार की हाट

प्रभात
चित्रः प्रोइति रॉय

आग जलाने दियासलाई
पानी को मिट्टी की सुराही
फुकनी चिमटा और कड़ाही
गले की माला गढ़ी गढ़ाई
यानी कि हर बात
मिल जाती है जब लगती है
शुक्रवार की हाट
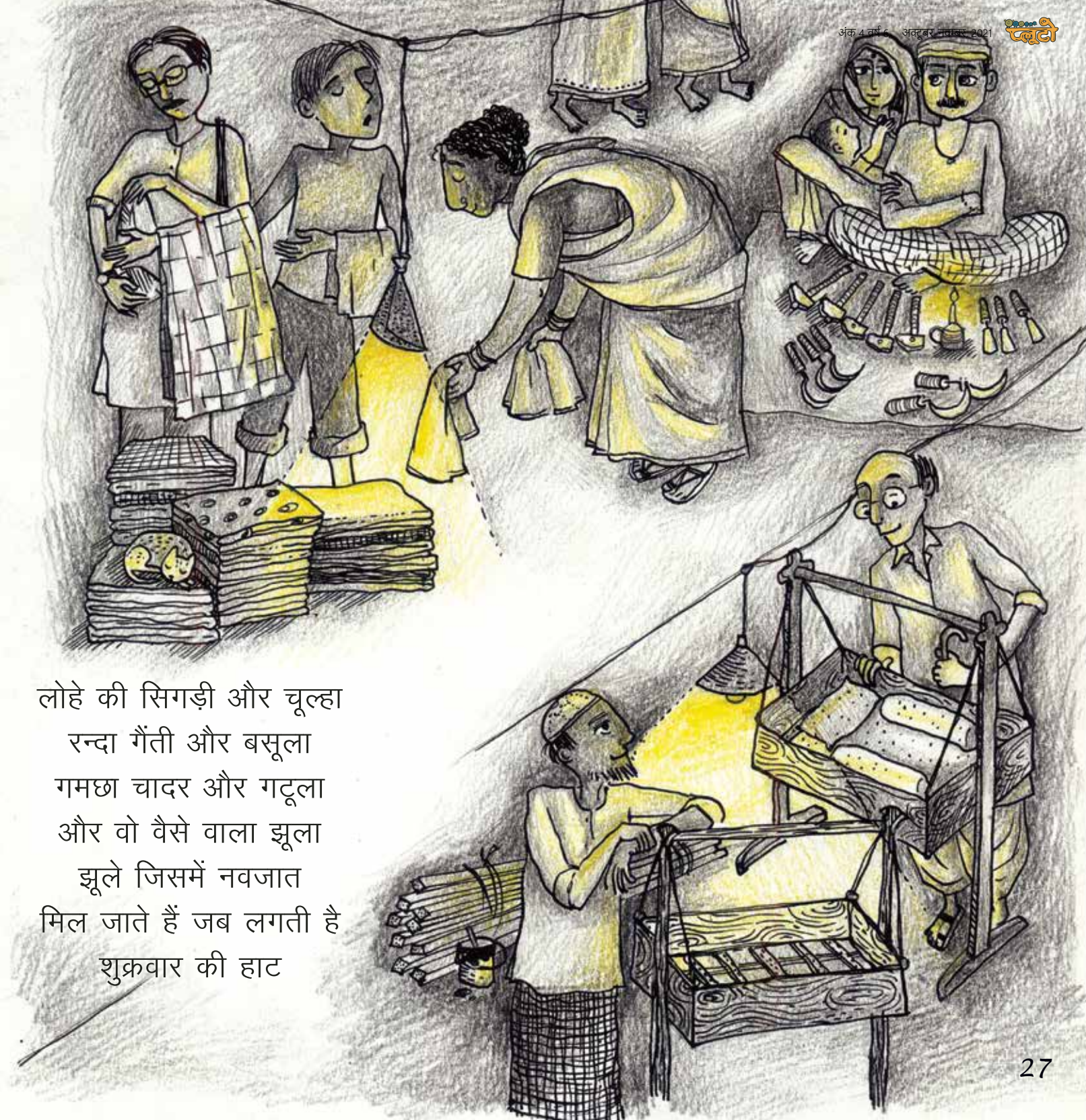
लोहे की सिगड़ी और चूल्हा
रन्दा गैंती और बसूला
गमछा चादर और गटूला
और वो वैसे वाला झूला
झूले जिसमें नवजात
मिल जाते हैं जब लगती है
शुक्रवार की हाट

हथचक्की के पाट यहाँ पर
लकड़ी की है खाट यहाँ पर
भैंस का चारा बाँट यहाँ पर
बोरों वाला टाँट यहाँ पर
और खिड़की कपाट
मिल जाते हैं जब लगती है
शुक्रवार की हाट
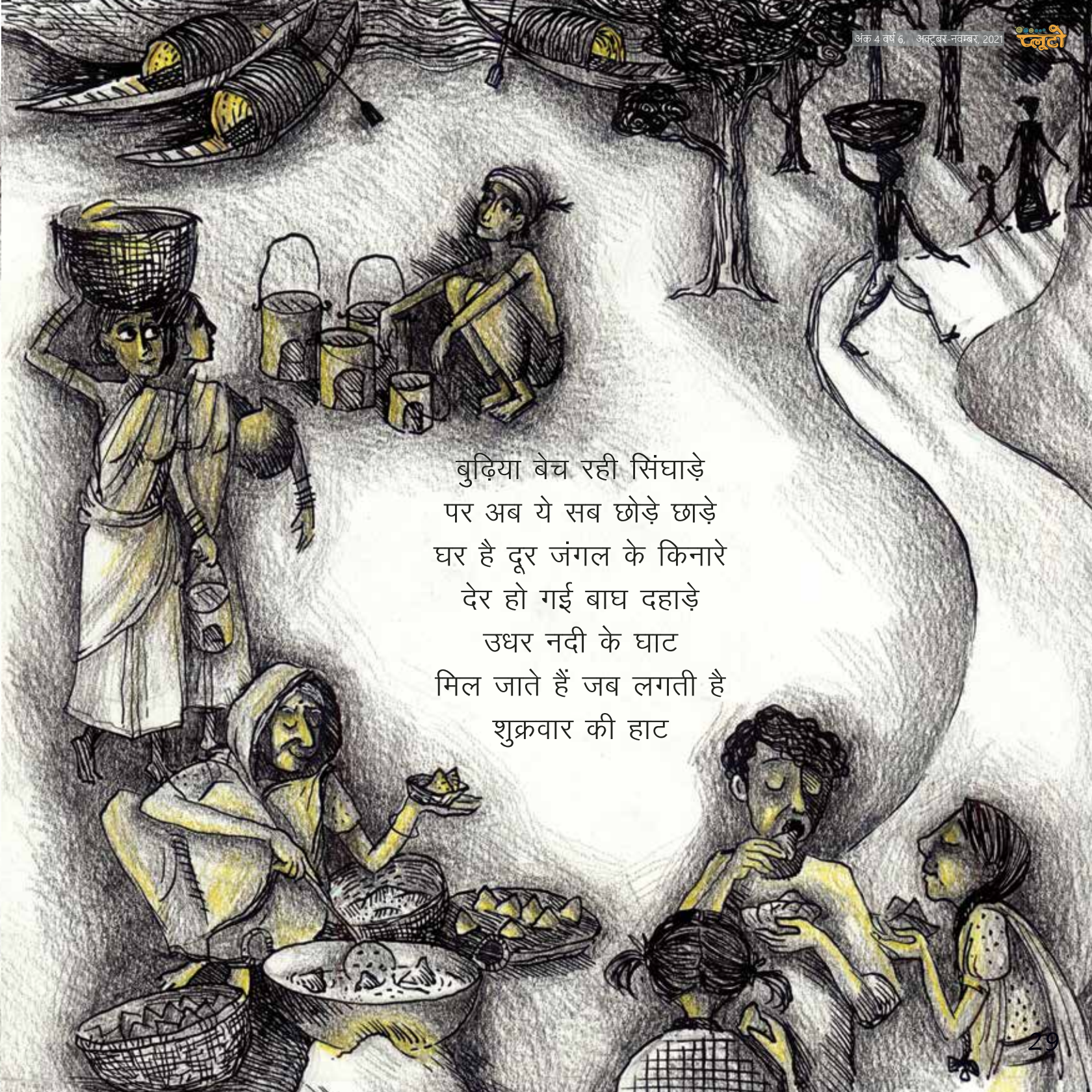
बुढ़िया बेच रही सिंघाड़े
पर अब ये सब छोड़े छाड़े
घर है दूर जंगल के किनारे
देर हो गई बाघ दहाड़े
उधर नदी के घाट
मिल जाते हैं जब लगती है
शुक्रवार की हाट

अंक 4 वर्ष 6, अक्टूबर-नवम्बर, 2021 प्लूटो

चित्रः प्रोइति रॉय

प्लूटो
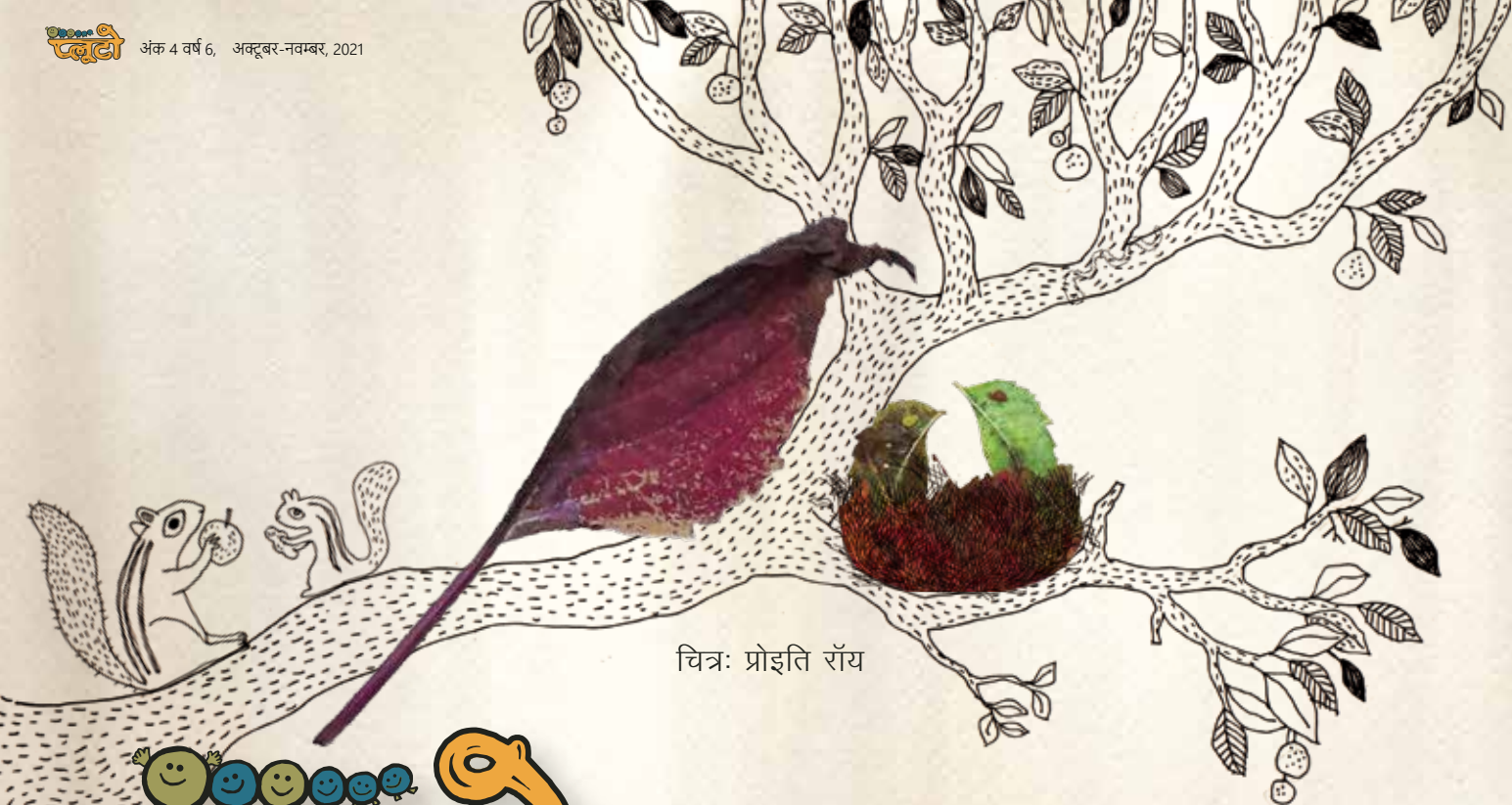
इकतारा द्वारा विकसित

दुमाही बाल पत्रिका

अवधि	अंक	सदस्यता दर (पंजीकृत डाक शुल्क सहित)
एक साल	6	₹ 425
दो साल	12	₹ 850
तीन साल	18	₹ 1275

एक प्रति - ₹ 60 (डाक खर्च अतिरिक्त)
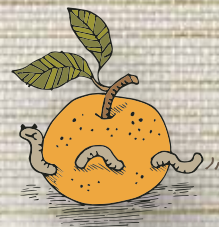
सम्पादन - सुशील शुक्ल, शशि सबलोक
उपसम्पादक - चन्दन यादव, निधि गौड़
डिज़ाइन - प्रोइति रॉय
आवरण चित्र - भार्गव कुलकर्णी
वितरण - राजेन्द्र परमार, अनीता शर्मा

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन–तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर सर्विसेज़, शेड नं. 92, डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, सम्पादक - सुशील शुक्ल

भुगतान विवरण – बैंक ड्राफ्ट/चेक इकतारा ट्रस्ट Ektara Trust के नाम नई दिल्ली में देय। ऑनलाइन ट्रांसफर आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, बी-78 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली, खाता नम्बर 630001028225, IFSC Code - ICIC0006300 में भेजें।

ऑनलाइन खरीद की लिंक
www.ektaraindia.in/order-publications/

भुगतान और वितरण की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा–तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र
ई-1/212 , अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462016
फोन - 0755-2446002/4939472,
9109915118 9630097118
ई-मेल - pluto@ektaraindia.in
वेबसाइट - www.ektaraindia.in

चित्रः प्रोइति रॉय